शीतलाष्टमी

(चैत्र कृष्ण अष्टमी)

शीतलाष्टमी (बासोडा) का व्रत केवल चैत्र अष्टमी को होता हैं। होली के 7-8 दिन बाद अर्थात चैत्र कृष्ण पक्ष में शीतला माता की पूजा की जाती हैं। यह माना जाता हैं कि यह पूजा करने से बच्चों को चेचक नहीं निकलती। कुछ परिवारों में तो यह पूजा होली के आठ दिन बाद अष्टमी को भी की जाती है, तो कुछ परिवार होली के 3-4 दिन बाद पड़ने वाले सोमवार, बुधवार, शुक्रवार को यह पूजा करते हैं।

धार्मिक पर्व होते हुए भी इस पूजा में अधिक बंधन नहीं हैं। बासोडा के एक दिन पूर्व गुड़, चीनी का मीठा भात आदि बनाना चाहिए। मोठ, बाजरा भिगोकर तथा रसोई की दीवार धोकर हाथ सहित पांचों उंगलियां घी में डुबोकर एक छापा लगाना चाहिए तथा रोली चावल चढ़ाकर शीतला माता के गीत गाने चाहिए। व्रत को इस दिन स्नानादि नित्यकर्मों से निवृत्त होना चाहिए। इसके बाद एक थाली में एक दिन पहले बनाए गए भात, रोटी, दही, चीनी, रोली, चावल, मूंग की दाल (भीगी हुई), हल्दी, धूपबत्ती, एक गूलरी की माला, मोठ, बाजरा आदि सब सामान रखकर एक लोटे में जल भर लेना चाहिए। इस सामान को घर के सभी प्राणियों को छुआ लेना चाहिए। यदि किसी के यहां कुंडारा भरता हो तो एक बड़ा कुंडारा और 10 छोटे कुंडारे मंगा लें। फिर एक कुंडारा में रबड़ी, एक में भात, एक में रसगुल्ला, एक में बाजरा, एक में हल्दी पीसकर रख दें तथा एक में इच्छानुसार पैसे रख लें। फिर ये सब कुंडारे, बड़े कुंडारे में रख लें व जल्दी से उनकी पूजा कर लें। इसके बाद सब कुंडारे और समस्त पूजा सामग्री शीतला माता पर चढ़ाकर पूजन करना चाहिए। कुंडारा का पूजन करने के बाद कथा सुनें। यदि किसी के लड़का हुआ हो या लड़के का विवाह हुआ हो तो वह पूजा समाप्ति का उत्सव करे। पूजा समाप्ति के उत्सव में जितने कुंडारे हमेशा पूजे हों उतने ही और कुंडारे पूज लें। शीतला माता का व्रत करने से व्रती के कुल में दाह ज्वर, पीत ज्वर, दुर्गन्धयुक्त फोड़े, नेत्ररोग, चेचक के निशान और शीतला जनित सब रोग दूर होते हैं तथा शीतला माता सदैव संतुष्ट रहती हैं। शीतला के रोगी की देह में दाहयुक्त फोड़े हो जाते हैं, जिसके कारण उसे नग्न रहना पड़ता हैं। गधे की लीद की गंध से फोड़े की पीड़ा को आराम मिलता हैं। इस रोग का प्रकोप जिस घर में होता हैं वहां अन्नादि की सफाई व झाड़ू लगाना वर्जित हैं। अतः इन कामों को बंद रखने के लिए झाड़ू व सूप रोगी के सिरहाने रखते हैं। नीम के पत्ते रखने से रोगी के फोड़े में सड़न पैदा नहीं होती।

कथा-1

किसी समय एक गांव मे एक बुढ़िया रहती थी। वह बासोडे के दिन शीतला माता की पूजा करती और बासी खाना खाती थी। उसके गांव में और कोई शीतला माता को नहीं पूजता था। एक दिन उस गांव में आग लग गई। जिसमें केवल बुढ़िया की झोपड़ी को छोड़कर सबके घर जल गए। इससे सभी गांव वालों को बहुत आश्चर्य हुआ। तब वे सब लोग बुढ़िया के पास आए और इसका कारण पूछने लगे। तब बुढ़िया ने कहा- 'मैं तो बासोडे के दिन ठण्डा खाना खाती थी और शीतला माता की पूजा करती थी। परन्तु तुम लोग यह सब नहीं करते थे। इसलिए तुम्हारे घर तो जल गए और मेरी झोपड़ी बच गई।' तभी से पूरे गांव में बासोड़े के दिन शीतला माता की पूजा होने लगी और सब लोग उस दिन ठण्डा खाना खाने लगे। हे शीतला माता! जैसे तूने उसे बुढ़िया की रक्षा की, वैसे सब की रक्षा करना।

कथा-2

प्राचीन समय में एक बार एक राजा के इकलौते पुत्र को चेचक निकली। उसी राज्य में एक काछी के पुत्र को भी चेचक (शीतला) निकली हुई थी। वह काछी परिवार बहुत निर्धन था, परन्तु भगवती का उपासक था। वह धार्मिक दृष्टि से जरूरी समझे जाने वाले सभी नियमों को बीमारी के दौरान भलीभांति निभाता रहा। घर में साफ-सफाई का विशेष ध्यान रखा जाता था। नियम से भगवती की पूजा होती थी। घर में नमक खाने पर पाबंदी थी। यहां तक कि सब्जी में न तो छौंक लगता था और न कोई वस्तु भूनी-तली जाती थी। गरम वस्तु न व स्वयं खाता न शीतला निकले पुत्र को खिलाता। यह सब करने से उसका पुत्र जल्दी ठीक हो गया। उधर जब से राजा के लड़के को शीतला का प्रकोप हुआ, तब से उसने भगवती के मंदिर में शतचण्डी का पाठ शुरू करवा रखा था। उस मंदिर में रोज हवन और बलिदान होते थे। राजपुरोहित भी सदा भगवती की पूजा में मग्न रहते। राजमहल में प्रतिदिन कड़ाही चढ़ती और विविध प्रकार के गर्म स्वादिष्ट भोजन बनते। साथ ही कई प्रकार के मांस पकते थे। इसका परिणाम यह होता कि उन स्वादिष्ट भोजनों की गंध से राजकुमार का मन मचल उठता और वह भी उस भोजन को खाने की जिद करता। एक तो राजकुमार और वह भी इकलौता, इसलिए उसकी सभी मांगे पूरी कर दी जाती। इस पर राजकुमार पर शीतला का कोप घटने के बजाय बढ़ने लगा। शीतला के साथ-साथ उसके शरीर पर बड़े-बड़े फोड़े निकलने लगे, जिनमें खुजली व जलन अधिक होती थी। शीतला की शांति के लिए राजा जितने उपाय करता, प्रकोप उतना ही बढ़ जाता। क्योंकि अज्ञानतावश राजा के यहां सभी कार्य उल्टे हो रहे थे। इससे राजा और अधिक परेशान हो गया। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि इतना सब करने के बाद भी शीतला का प्रकोप शांत क्यों नहीं हो रहा। एक दिन राजा के गुप्तचरों ने उसे बताया कि काछी पुत्र को भी शीतला निकली थी, परन्तु अब वह बिल्कुल ठीक हो गया हैं। यह सुनकर राजा सोच में पड़ गया कि मैं शीतला की इतनी सेवा कर रहा हूं, पूजा व अनुष्ठान में कोई कमी नहीं, फिर भी मेरा पुत्र अधिक रोगी होता जा रहा हैं जबकि काछी पुत्र बिना सेवा-पूजा के ही ठीक हो गया। इसी सोच में उसे नींद आ गई। रात में स्वप्न में श्वेत वस्त्र धारिणी भगवती ने दर्शन देकर कहा- 'हे राजन! मैं तुम्हारी सेवा-पूजा से प्रसन्न हूं इसीलिए आज भी तुम्हारा पुत्र जीवित हैं। इसके ठीक न होने का कारण यह हैं कि तुमने शीतला के समय पालन करने योग्य नियमों का उल्लंघन किया। तुम्हें ऐसी हालत में नमक का प्रयोग बंद कर देना चाहिए। नमक से रोगी के फोड़ों में खुजली होती हैं। घर में सब्जियों में छौंक नहीं लगाना चाहिए, क्योंकि उसकी गंध से रोगी का मन उन वस्तुओं को खाने के लिए ललचाता हैं।

रोगी के पास किसी का आना-जाना भी मना हैं क्योंकि यह रोग औरों को भी लगने का भय रहता हैं। अतः इन नियमों का पालन कर, तेरा पुत्र अवश्य ही ठीक हो जाएगा।' यह सब समझाकर देवी अंतर्धान हो गई। प्रातः होते ही राजा ने देवी की आज्ञानुसार सभी कार्यों की व्यवस्था कर दी। इससे राजकुमार की सेहत पर प्रभाव पड़ा और वह शीघ्र ठीक हो गया। राजा ने आदेश निकलवा दिया और सभी घरों में शीतला माता का पूजन विधिपूर्वक किया जाने लगा।

पापमोचनी एकादशी

(चैत्र कृष्ण एकादशी)

यह एकादशी पापमोचनी एकादशी कहलाती हैं। इस दिन भगवान विष्णु को अर्घ्य दान देकर षोडशोपचार पूजा करनी चाहिए। तत्पश्चात धूप, दीप, चंदन आदि से नीराजन करना चाहिए। इस दिन निंदित कर्म तथा मिथ्या भाषण नहीं करना चाहिए। एकादशी के दिन भिक्षुक, बंधु-बांधव तथा ब्राह्मणों को भोजन दान देना फलदायी होता हैं। इस व्रत के करने से समस्त पापों का नाश होता हैं और सुख समृद्धि प्राप्त होती हैं। जैसा कि इसके नाम से स्पष्ट हैं इस व्रत को करने से ब्रह्महत्या, स्वर्णचोरी, मद्यपान, अहिंसा, अगम्यागमन, भ्रूणघात आदि अनेकानेक घोर पापों के दोषों से मुक्ति मिल जाती हैं।

कथा

प्राचीन काल में चैत्ररथ नामक अति रमणीक वन था। इस वन में च्यवन ऋषि के पूत्र मेधावी नामक ऋषि तपस्या करते थे। इसी वन में देवराज इंद्र गंधर्व कन्याओं, अप्सराओं तथा देवताओं सहित स्वच्छंद विहार करते थे। ऋषि शिव भक्त तथा अप्सराएं शिवद्रोही कामदेव की अनुचरी थी। एक समय की बात हैं कामदेव ने मेधावी मुनि की तपस्या को भंग करने के लिए मंजुघोषा नामक अप्सरा को भेजा। उसने अपने नृत्य गान और हाव-भाव से ऋषि का ध्यान भंग किया। अप्सरा के हाव-भाव और नृत्य गान से ऋषि उस पर मोहित हो गए। दोनों ने अनेक वर्ष साथ-साथ गुजारे। एक दिन जब मंजुघोषा ने जाने के लिए आज्ञा मांगी तो ऋषि को आत्मज्ञान हुआ। उन्होंने समय की गणना की तो 57 वर्ष व्यतीत हो चुके थे। ऋषि को अपनी तपस्या भंग होने का भान हुआ। उन्होंने अपने को रसातल में पहुंचाने का एकमात्र कारण मंजुघोषा को समझकर, क्रोधित होकर उसे पिशाचनी होने का शाप दिया। शाप सुनकर मंजुघोषा कांपने लगी और ऋषि के चरणों में गिर पड़ी। कांपते हुए उसने मुक्ति का उपाय पूछा। बहुत अनुनय-विनय करने पर ऋषि का हृदय पसीज गया। उन्होंने कहा- 'यदि तुम चैत्र कृष्ण पापमोचनी एकादशी का विधिपूर्वक व्रत करो तो इसके करने से तुम्हारे पाप और शाप समाप्त हो जाएंगे और तुम पुनः अपने पूर्व रूप को प्राप्त करोगी।' मंजुघोषा को मुक्ति का विधान बताकर मेधावी ऋषि अपने पिता महर्षि च्यवन के पास पहुंचे।शाप की बात सुनकर च्यवन ऋषि ने कहा- 'पुत्र यह तुमने अच्छा नहीं किया। शाप देकर स्वयं भी पाप कमाया हैं। अतः तुम भी पोपमोचनी एकादशी का व्रत करो। इस प्रकार पापमोचनी एकादशी का व्रत करके मंजुघोषा ने शाप से तथा ऋषि मेधावी ने पाप से मुक्ति पाई।

जरूरी है आत्म-सम्मान

यदि आप सुखी व संतुष्ट रहकर समाज में अपना एक खास मुकाम हासिल करना चाहती हैं, तो आत्म-सम्मान का जज्बा आपकी इन सारी हसरतों को साकार कर सकता है। याद रखें जो शख्स अपने सम्मान की रक्षा नहीं कर सकता, उसे समाज में सम्मान नहीं मिल सकता। इस संदर्भ में कुछ टिप्स-

- कभी भी अपनी तुलना दूसरों से न करें। यहां तक कि अपने 'रोल मॉडल' से भी अपनी तुलना न करें। याद रखें हर शख्स की खूबियां व कार्यक्षमता अलग-अलग होती है।
- यदि आपका चेहरा व लुक्स आकर्षक नहीं है, तो अपने मन में हीनभावना न लाएं। प्रतिभा, कार्यक्षमता और मन की शक्ति सबसे बड़ी संपदा है। इसलिए अपनी प्रतिभा का प्रयोग करें।
- स्वयं पर भरोसा रखें। याद रखें, जब तक आप स्वयं को समाज में सशक्त ढंग से पेश नहीं करतीं, तब तक आपका आत्मविश्वास नहीं बढ सकता।

रत्नों का पेड़

जैम ट्री अर्थात् रत्नों का पेड़ कई प्रकार का होता है। यह क्वार्ट्ज, रोज क्वाट्र्ज, ऐमेथिस्ट तथा मोती का मिलता है। घर में सुख-समृद्धि तथा व्यापार में बढ़ोतरी के लिए यह शुभ रहता है।

फैंगशूई

यह 7 इंच, 12 इंच व 15 इंच के नाम में मिलते हैं। साधारण कीमत में आने वाला जैम ट्री देखने में बहुमूल्य प्रतीत होता है। सुंदर लगने के साथ-साथ यह सुख-समृद्धि की प्राप्ति के अवसर भी बढ़ाता है।

मोक्षदायिनी एकादशी व्रत

ज्योतिष विज्ञान के अनुसार शुक्लपक्ष एकादशी तथा कृष्णपक्ष एकादशी को क्रमशः चंद्र तथा सूर्य की कलाओं का प्रभाव जीवों पर पड़ता है। जिसके कारण शरीर की अवस्था तथा मन की चंचलता स्वाभाविक रूप से बढ़ जाती है। इसलिए शरीर तथा मन पर पड़ने वाले विपरीत प्रभाव को निष्फल करने के लिए एकादशी तिथि को उपवास करके लाभान्वित हो सकते हैं।

उपवास से शरीर पुष्ट तथा इष्ट-पूजन से मन नियंत्रित होता है। भारतीय संस्कृति में सभी व्रतों का विधान अलग होते हुए भी सबका उद्देश्य एक ही है- शारीरिक, मानसिक तथा अध्यात्मिक स्वास्थ्य की प्राप्ति। एकादशी व्रत से प्राप्त कर सकते हैं। इस दिन भोजन करना निषेध है। बालक-वृद्ध फल, दूध तथा जल का आहार लेकर उपवास कर सकते हैं।

वशिष्ठ स्मृति के अनुसार दशमी-युक्त (विद्धा) एकादशी में उपवास नहीं करें। इससे संतान को कष्ट होता है। अग्नि पुराण में लिखा है कि द्वादशी-विद्धा एकादशी में स्वयं श्रीहरि स्थित होते है, इसलिए द्वादशी-विद्धा एकादशी के व्रत का त्रयोदशी को पारण करने से मनुष्यों को सौ यज्ञों का पुण्यफल प्राप्त होता है।

एकादशी व्रत का प्रारंभ मार्गशीर्ष कृष्णपक्ष की उत्पन्ना नाम एकादशी से करें तथा उद्यापन मार्गशीर्ष शुक्लपक्ष की मोक्षदा नाम की एकादशी को करें। व्रत के दिन स्नान आदि नित्यकर्म से निवृत्त होकर भगवान से प्रार्थना करें- पुरुषोत्तम यदि मुझसे व्रत से संदर्भ में कोई भूल हो जाए, तो क्षमा करें, उसके पश्चात षोडशोपचार से भगवान का पूजन करें तथा आरती करें।

संभव हो तो विष्णु सहस्त्रनाम का पाठ करके 11 माला 'ॐ नमो नारायाणाय' मंत्र की जपें।

कैमरा

कैमरे ने दृश्यों के चित्र लेकर उन्हें स्थाई बनाना, संभव बना दिया। कैमरा मूल रूप से एक 'लाइट प्रूफ' (रोशनी रोधी) डिब्बा है जिसमें सामने की तरफ एक छेद होता है तथा वस्तु की छवि को एक संवेदनशील फिल्म पर केंद्रित करने के लिए शीशे का एक लैंस होता है। एक साधारण कैमरे में केवल एक शटर होता है जो बहुत थोड़े से समय के लिए खुलता है और फिर लैंस को बंद कर देता है ताकि बहुत कम समय के लिए फिल्म रोशनी के सम्पर्क मे आ सके। इसमें एक लपेटने वाला मैकैनिज्म भी होता है ताकि फिल्म प्रत्येक फोटोग्राफ के लिए लैंस के पीछे सही स्थान पर रहे। फोटोग्राफी का आविष्कार किसी एक व्यक्ति द्वारा नहीं किया गया था। जोसफ निप्से नामक एक फ्रांसीसी ने 1816 में एक बाक्स कैमरा बनाया तथा उससे एक नैगेटिव इमेज तैयार की और इसके एक्सचेंज होने में 8 घंटे का समय लगा।

एक अन्य फ्रांसीसी लुइस डैगनेरे ने 1839 में चांदी की परत चढ़ी तांबे की एक प्लेट पर कुछ ही मिनटों में एक अच्छी फोटोग्राफ तैयार कर लिया परंतु इस तरह के फोटोग्राफकी और प्रतियां करना संभव नहीं था।

उस समय से लेकर फोटोग्राफी की नैगेटिव पॉजिटिव प्रक्रिया को विकसित करने के लिए अथक प्रयास किए गए। 1839 मे विलयन हैनरी फॉक्स टालबोट ने नैगेअिव-पॉजिटिव प्रक्रिया का इस्तेमाल करते हुए एक कैमरे का निर्माण किया। इसके कारण एक नैगेटिसव से किसी दृश्य या चित्र की बार-बार दोबारा प्रतियां संभव हो सका। 1888 में कोडैक प्रणाली पर आधारित एक बॉक्स कैमरा मार्कीट में पेश किया गया।

बर्फबारी का आनंद

कौन नहीं चाहता बर्फबारी का लुत्फ उठाना। बर्फ के गोले बना कर एक -दूसरे पर मारना। यह सब मौज तो पर्यटन का हिस्सा है। सबके नसीब में कहां। जो पहाड़ वासी हैं, उनकी बात अलग है। उनको शायद बर्फ इतना रोमांचित भी नहीं करती हो। बर्फ उनके जीवन का हिस्सा होती है। वे उसे जितना जानते हैं, उतना हम आप नहीं। बर्फ के बारे में आइए हम आपको बताते हैं, कुछ ऐसी सच्चाई जिसे विरले ही जानते हैं-

ल नमक और हीरे की तरह बर्फ भी एक तरह का मिनरल है।ल बर्फ के हर टुकड़े के केंद्र में धूल का एक महीन कण होता है।ल ताजा गिरी बर्फ में 90 से 95 फीसदी हवा होती है। ल गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्डस सबसे बड़ा बर्फ का टुकड़ा 15 इंच मोटा था, जिससे 1887 में मोंटाना का कियोग फोर्ट दब गया था। ल बर्फ का एक टुकड़ा अपनी मोटाई से करीब 50 गुना अधिक चौड़ा होता है।ल आसमान से गिरने वाली बर्फ हमेशा सफेद ही नहीं होती। ऐसी भी रिपोर्टें हैं कि आसमान से लाल, पीली अथवा काली बर्फ भी गिरती है। ऐसा संभवतः प्रदूषण के नाते होता हो।ल बर्फ खाने में अच्छी है पर इससे जुखाम हो सकता है। ल यह सिर्फ भ्रांति है कि चीखने, अलापने और तेज आवाजों से हिमस्खलन होता है। ल अमेरिका में बर्फ की वजह से सबसे सफेद स्थान अलास्का का वाल्डेज है।

वहां हर वर्ष औसतन 326 इंच बर्फ गिरती है। ल उत्तरी ध्रुव और दक्षिणी ध्रुव पर ज्यादा बफबारी नहीं होती। वहां बर्फीली आंधियां चलती रहती हैं।

बेंटली नामक फोटोग्राफर ने 1885 में बर्फ के टुकड़े की पहली फोटो खींची थी। पांच हजार बर्फ के टुकड़ों की फोटो खींचने के बाद वह निमोनिया से मर गया था।ल 'स्लोबॉल अर्थ थियरी' के अनुसार 60 हजार लाख वर्ष पहले पृथ्वी बर्फ से पूरी तरह ढकी थी। ल बर्फ के बीच रहने वालों को पिब्लोटॉक हो जाता है। आर्कटिक क्षेत्र में रहने वाले अक्सर इसका शिकार हो जाते हैं। यह हिस्टीरिया सा है, जिसमें व्यक्ति सुनी हुई बातों को अनायास बड़बड़ाता रहता है। कभी-कभी वह नग्न होकर बर्फ पर दौड़ने भी लगता है।

- **अरविन्द मिश्र**

मेवाड़ की धरोहर - 47

मेवाड़ का शौर्यपूर्ण अनुवंश

मेवाड़ महिमा
- नारायण लाल शर्मा -

पन्नाधाय-

एक अपूर्व नाम पन्ना धाय। जिसने महाराणा सांगा के पुत्र उदयसिंह को बचाने के लिये अपने पुत्र चन्दन का बलिदान दे दिया। मेवाड़ की थाती को सुरक्षित रखने के लिये उसने अपने कुल को स्वतंत्रता के यज्ञ में होम कर दिया, मेवाड़ का वंशदीपक अक्षुण्ण रखने के लिये उसने अपने कुल के दीपक को बुझा दिया। ऐसी पन्ना के बारे में किस भारतीय को जानने की इच्छा न होगी। संसार के इतिहास में ऐसा दूसरा उदाहरण मिलना असम्भव है। वास्तव में पन्ना स्वामिभक्ति और कर्तव्यपरायणता की साकार प्रतिमा थी।

पन्ना गांव पाण्डोली के हरचन्द हांकला गुर्जर की पुत्री थी। उसका विवाह सूरजमल चौहान गुर्जर, जिसके पिता का नाम लाला चौहान और माता का नाम गंगा (सवजी जी कागस की पुत्री) के साथ हुआ था। लाला कमेरी गांव, आमेट ठिकाने का था और सेना के साथ चित्तौड़ चला आया था। बाद में वह चित्तौड़ में ही आबाद हो गया था। पन्ना धाय का पति सूरजमल महाराणा की सेना में अधिकारी हो गया था। सन् 1535 में दूसरे शाके के समय दुर्ग की रक्षा करते हुए वह वीर गति को प्राप्त हो गया था। उस समय पन्ना उदयसिंह के साथ बून्दी में थी अतः सूरजमल का करयावर (मौसर) नहीं हो पाया था। (पन्नाधाय का अपूर्व त्याग- उदयलाल धायभाई-पृ. 9-10)

मेवाड़ की परम्परा थी कि राज परिवार में राजकुमार और राजकुमारियों के पालन-पोषण के लिये गुर्जर जाति के धवा या धाय को रखा जाता था। इसी कारण पन्ना को भी उदयसिंह की धाय के रूप में रखा था। पन्ना का लड़का चन्दन भी उसी उम्र का था। दूसरे शाके के पूर्व राजमाता कर्मवती ने उदयसिंह को सम्भालने के लिये पन्ना को देते हुए कहा था कि ''तू ने चित्तौड़ और रणथम्भोर में बाल्यकाल से ही मेरे बेटे उदयसिंह को पाला है, इस युद्ध के बाद मैं बचूं या मर जाऊं, आज से तुम ही इसकी माता हो इसके संरक्षण का दायित्व तुम्हारा है।'' कर्मवती तो जौहर की ज्वाला में सती हो गई परन्तु पन्ना ने एक स्वामिभक्त सेवक की भांति उदयसिंह को सम्भाला। (वही-14-16)

युद्ध समाप्ति के पश्चात् राजपूतों ने मौका पाकर चित्तौड़ को पुनः अपने अधिकार में कर लिया। पन्ना भी उदयसिंह को लेकर चित्तौड़ चली आयी थी। राजपूत सरदारों ने यह सोचा था कि इस युद्ध के पश्चात् विक्रमादित्य के व्यवहार में परिवर्तन आयेगा। परन्तु राणा का व्यवहार देखकर उन्हें निराशा हुई। वे धीरे-धीरे राज्य के प्रति उदासीन होते गये। पन्ना की नजर इन राजनैतिक गतिविधियों पर थी ही अतः उसने सुरक्षा की दृष्टि से राज-दरबार और उसके बाहर होने वाली घटना के निरीक्षण हेतु कुछ विश्वस्त लोग रख दिये थे जो समय समय पर पन्ना को आकर सूचित कर देते थे। पन्ना जिस बारे में आशंकित थी वह बात उसकी सही निकली। सांगा के बड़े भाई पृथ्वीराज के अनौरस पुत्र बनवीर का दरबार में वर्चस्व बढ़ता गया और एक दिन उसने विक्रम की भरे दरबार में हत्या कर दी। सूचना मिलते ही क्षण भर का विलम्ब न करते हुए पन्ना ने उदयसिंह को दुर्ग के बाहर सुरक्षित निकाल दिया और उसके स्थान पर अपने पुत्र चन्दन को लिटा दिया। चन्दन उस समय किशोर था उसे ज्ञात था कि जिस काम को वह कर रहा है उसमें उसका जीवन रहना संभव नहीं। फिर भी साहस के साथ वह वहां दृढ़ता के साथ आंखें मूंदकर लेटा रहा। (उदयपुर राज्य का इतिहास-गौ.ही. ओझा पृ. 401)

उदयसिंह की खोज में आये बनवीर ने कमरे में वेग से प्रवेश करते हुए पलंग पर चादर ओढ़कर सोये हुए चन्दन की हत्या कर दी, उस समय सीने पर पत्थर रखकर बिना आंसू बहाये पन्ना वहां खड़ी रही। उस समय उसके साथ पन्ना खींची, जो अन्य सेविका थी, भी उपस्थित थी (रावल राणा री वात)। पन्ना गुर्जर तो उदयसिंह के बारे में चिंतित थी। दु:खी मन से अपने बेटे चन्दन की मृत देह को उठाकर बेड़च नदी के किनारे ले गई जहां वारण, वारी और उदयसिंह खड़े थे। चन्दन का अग्निसंस्कार कर वे वहां से उस स्थान की तलाश में निकल पड़े जहां उसे संरक्षण मिल सके।

महाराणा विक्रमादित्य के पश्चात सम्पूर्ण मेवाड़ भय और आतंक के साये में जी रहा था। सत्ता के लिये यह दूसरी हत्या थी। बनवीर को भी इस बात का भय था कि इस घटना से मेवाड़ में असंतोष न फैल जाए अतः उसने सभी ओर गुप्तचरों का जाल बिछा दिया। ऐसी परिस्थिति में पन्ना को यह कठिनाई आना स्वाभाविक थी कि उदयसिंह को गुप्त स्थान पर कैसे ले जाया जाय। अतः उसने राजमार्ग का अनुसरण नहीं किया। वह वन-वन से उसे सुरक्षित स्थान ले जा रही थी। चित्तौड़ से निकलकर सबसे पहले वह अपने पितृ-गृह पाण्डोली गई जहां उसने अपने साथ अपने भाई को लिया (पन्ना का अपूर्व त्याग-उदयलाल धायभाई-पृष्ठ- 20)

यहां से वे सभी देवरिया (प्रतापगढ़) पहुंचे। देवरिया के रावत रायसिंह ने उनका स्वागत किया पर रावत ने बनवीर के भय से उदयसिंह को वहां ठहराने में असमर्थता जताई। पन्ना इन कठिनाइयों से निराश होने वाली नारी नहीं थी। उसने आगे की राह ठानी और मेवाड़ के बीहड़ जंगलों को पार करके वह डूंगरपुर पहुंची, जहां उस समय महारावल आसकरण राज कर रहे थे। उसने भी उनका स्वागत तो किया परन्तु अपने यहां ठहराने के लिये मना कर दिया। मार्ग की सुरक्षा के लिये उसने प्रबन्ध अवश्य कर दिया। पन्ना ने इन सामन्तों के व्यवहार से यह जान लिया कि कोई भी सामन्त इस समय उसका साथ देने वाला नहीं है। अतः पन्ना ने बिना समय खोये कुम्भलगढ़ जाने का तय किया (उदयपुर राज्य का इतिहास-ओझा, पृ. 403) (क्रमशः)

(क्रमशः)